हमारे अगुवों की ओर से सन्देश

कोलम्बिया में जनमत संग्रह के बाद शान्ति का मार्ग

आइवन मारक्यूज़, एफएआरसी के मुख्य वार्ताकार, पीड़ितों से क्षमा मांगते हैं और फिर मेलमिलाप की एक भावनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में पीड़ित पक्ष आइवन को गले लगा लेते हैं। पीड़ित की टी शर्ट में लिखा है, ''हम पीड़ित अवश्य ही क्षमा करते हैं।'' तस्वीर एल इस्पेक्टाडोर से लिया गया, 30 सितम्बर 2016। (http://www.elespectador.com/noticias/politica/jamas-debio-ocurrir-ivan-marquez-victimas-de-chinita-articulo-657822).

विज्ञप्ति जारी करने की तिथि: बुधवार, 12 अक्टूबर 2016

कोलम्बिया में 2 अक्टूबर 2016 को एक जनमत संग्रह किया गया, इस जनमत संग्रह का उद्देश्य था कि सरकार तथा फ्यूएरज़ास आर्माडास रिवोल्यूशनरियाज़ डे कोलम्बिया – एजरेसिटो डेल प्यूब्लो (रिवोल्यूशनरी आर्मड फोर्सेस ऑफ कोलम्बिया – पीपुल्स आर्मी, (एफएआरसी) के बीच चार वर्षो की बातचीत के बाद हुआ समझौता नागरिकों को स्वीकार है या नहीं। इस प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के समूहों ने भाग लिया, नागरिकों के समूह, अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार, और सबसे महत्वपूर्ण इस सशस्त्र संघर्ष में प्रभावित हुए पीड़ित। समझौते में छह क्षेत्रों को शामिल किया गया था: (1) समग्र ग्रामीण क्षेत्र सुधार – कृषि विकास को बढ़ावा देना, भूमि तक सुगम पहुँच, तथा गरीबी उन्मूलन; (2) राजनैतिक हिस्सेदारी जिसमें अहिंसक संघर्ष का मार्ग अपनाना; राजनैतिक रणनीति के तहत हथियारों के उपयोग से दूर रहना, और मेलमिलाप को बढ़ावा देना; (3) सशस्त्र संघर्ष को समाप्त करना; एफएआरसी द्वारा शस्त्रों का त्याग करना और पुन: सामान्य नागरिक जीवन में अपने आप को जोड़ना (4) पीड़ितों के मानवीय अधिकारों की गारंटी, जिसमें सत्य को सामने लाना, सहअस्तित्व को बढ़ावा देने वाले परिवर्तनवादी न्याय, मेलमिलाप और पुनरावृत्ति न होने देने की गारंटी शामिल है; (5) नशीली दवाओं की समस्या का समाधान; और (6) नागरिकों के द्वारा सत्यापित/स्वीकृत समझौतों का निरीक्षण और उसे लागू करने को सुनिश्चित करने हेतु ढाँचा।

इस प्रक्रिया की परिवर्तनकारी शक्ति दोनों पक्षों की ओर से युद्ध विराम और एफएआरसी द्वारा अपने लक्ष्यों को हथियारों की बजाए बातचीत के द्वारा प्राप्त करने के संकल्प में दिखाई दी। यह इस तस्वीर के समान अन्य दृश्यों में भी दिखाई दिया। इस तस्वीर में आइवन मारक्यूज़, एफएआरसी की ओर से वार्तालाप के प्रमुख प्रवक्ता, पीड़ितों से क्षमा मांगते हैं और फिर पीड़ितों में से एक मेलमिलाप की एक भावुक अभिव्यक्ति में आइवन को गले लगा लेते हैं। शान्ति क्षेत्र के सरकार के उच्चायुक्त से जब यह कहा गया कि वे आइवन को एक शब्द में व्यक्त करें, तो उच्चायुक्त ने सिर्फ यह कहा, ''परिवर्तित।''

परन्तु इसके बाद भी, जब समझौते पर जनमत संग्रह कराने के लिए मतदान सम्पन्न हुआ, तो जनसंख्या के 62% लोगों ने स्वयं को इससे दूर रखा, और जितनों ने मतदान में भाग लिया उनमें से 50.23% लोगों ने समझौते के विरोध में तथा 49.76% ने समझौते के पक्ष में मत दिया। यह प्रस्ताव पारित नहीं हो सका। देश में जिन क्षेत्रों में लोग सबसे अधिक प्रभावित हुए थे, वहाँ बहुमत ने पक्ष में मतदान किया। जो क्षेत्र युद्ध में कम प्रभावित हुए थे, वहाँ बहुमत ने विरोध में मत दिया।

मतदान के दौरान, प्रत्येक व्यक्ति ने कहा कि वह शान्ति के पक्ष में है; किन्तु जिन्होंने समझौते का विरोध किया उन्होंने कहा, ''हम शान्ति चाहते तो हैं, परन्तु इन शर्तों पर नहीं।'' सभी स्थानों पर इन समझौतों पर जोरदार वादविवाद हुए, कलीसियाओं और निश्चय ही मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस (एमडबल्यूसी) से सम्बन्धित ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाओं में भी इस विषय पर वादविवाद और चर्चाएं हुई। समझौते के प्रस्ताव का विरोध करने के लिए सबसे बड़ी सुसमाचारवादी (इव्हेंजलिकल) कलीसियाओं के कुछ अगुवों के प्रचार तथा मतदान परिणाम में बहुत कम अन्तर को देखते हुए, सुसमाचारवादी कलीसियाओं के निर्णायक प्रभाव को जनमत संग्रह के परिणाम में अनदेखा करना कठिन है।

जिन्होंने समझौते के पक्ष में मत दिया उन्होंने इस समझौते को निम्नलिखित रूप में देखा: अहिंसक राजनैतिक कदम के पक्ष में शस्त्रत्याग का एक माध्यम; शान्ति स्थापना के प्रयास जो बेदाग और भयमुक्त हो; पुनर्स्थापना करने वाला न्याय, पीड़ितों को प्राथमिकता, और ऐसे प्रस्ताव जो ढाँचागत सामाजिक आर्थिक वास्तविकताओं को इस तरीके से सम्बोधित करते हैं जो देश में और लोगों के सबसे कमजोर वर्ग के कल्याण का कारण बनें। जिन लोगों ने समझौते के विरोध में मतदान किया उनका मानना था बीच का रास्ता निकाल कर न्याय का अर्थ है – सजा से बच जाना, उन्हें विद्रोही नेताओं को राजनीति में भाग लेने की अनुमति देना स्वीकार नहीं है, हथियार छोड़ने वाले विद्रोहियों को बहुत लाभ मिल जाएंगे, ग्रामीण क्षेत्रों में विकास अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव डालेगा; महिलाओं और

एलजीटीक्यू के रूप में पहिचाने जाने वाले (दोनों को विशेष रूप से पीड़ितों के रूप में देखा जाता है) को प्राथमिकता देना लिंग भेद के लिए जगह बनाता है और परिवार पर यह एक आक्रमण के समान है। यह अन्तिम मुद्दा कलीसिया के अनेक लोगों के लिए बड़ी चिन्ता की बात थी।

इस बात को भी ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि प्रचार अभियान के दौरान अनेक तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करने के आरोप लगे हैं; जैसा कि समझौता के विरोध में प्रचार करने वाले एक अभियान के सभापति ने स्वीकार किया।

कलीसिया के रूप में, हमारे सामने यह प्रश्न आता है कि यह कैसे सम्भव है कि हम दो अलग अलग निष्कर्षों तक पहुँचे (पक्ष में या विरोध में) जबकि हम सब का आधार एक ही बाइबल है और हम सब एक ही मसीह को अपने प्रभु के रूप में स्वीकार करते हैं? यह एक अवसर भी है कि हम महत्वपूर्ण मुद्दों से निपटने की अपनी क्षमता को इस तरीके से बढ़ावा दे जिससे कि एकता को सुदृढ़ किया जा सके – पक्षों में बंट जाने की बजाए हम 1 कुरिन्थियों 12:7 को ध्यान में रखें जो इस सत्य को दृढ़ करता है, ''सब के लाभ पहुँचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।''

जोस रिकार्डो टोरम, कोलम्बिया के ऐनाबैपटिस्ट शान्ति स्थापक, कालि में एक शान्ति रैली के बाद। झण्डों पर लिखा है, ''हाँ या नहीं की रैली, शान्ति की ओर मार्ग।''
तस्वीर: मारियोन मेयर

कोलम्बिया की ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाओं और एमडबल्यूसी की सदस्य कलीसियाओं के रूप में, परमेश्वर ने हमें अनुग्रह प्रदान किया है कि हम अपनी विभिन्नताओं का इंकार किए बिना ही एक साथ मिलकर परमेश्वर की आराधना और उसकी सेवा कर सकते हैं। हम एक साथ मिलकर संयुक्त आराधना सभाओं और शान्ति की शिक्षा पर कार्य कर सकते हैं, हम एक साथ मिलकर विवेक की आवाज सुनकर बाइबल के विपरीत बनाए गए सरकारी कानूनों को मानने से इंकार करने के मुद्दे पर कार्य कर सकते हैं; हम बच्चों, पीड़ितों, कमजोर तबके के लोगों के लिए साथ मिलकर कार्य कर सकते हैं। हमारी कलीसियाओं और संस्थाओं के इस संयुक्त प्रयास में, यह महत्वपूर्ण है कि हम मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी और एमडबल्यूसी के द्वारा दिए जाने वाले अर्थपूर्ण सहयोग के प्रति आभारी हो जिसके द्वारा वे एक साथ आने के लिए अवसर व स्थान उपलब्ध करवाते हैं। निश्चय ही, हम शान्ति के लिए प्रार्थना करना जारी रखेंगे और अपने प्रयासों को एक साथ जोड़ कर, प्रत्येक विश्वासी उस प्रकाश के अनुसार जो हमें दिया गया है योगदान देंगा। और वर्तमान शान्ति प्रक्रिया के इस चरण में, हम पवित्र आत्मा की अगुवाई को पहचानने के यत्न में लगे रहें।

अब जबकि जनमत संग्रह पूरा हो चुका है, सरकार ने कुछ समूहों का गठन किया है और राजनैतिक पार्टियों और ऐसे समूहों से मुलाकात कर रही है जो समझौता के विरोध में है ताकि पुनर्विचार करने के द्वारा एक राष्ट्रीय सहमति पर पहुँचा जा सके। नागरिक आंदोलन सक्रिय हो कर इस बात पर जोर दे रहे हैं कि लड़ाई दोबारा आरम्भ न हो और वे भी इस प्रक्रिया में अपने आप को शामिल किए जाने की मांग कर रहे हैं। एफएआरसी ने अपनी इस प्रतिबद्धता को दोहराया है कि वे शस्त्रों की बजाए बातचीत को ही राजनैतिक माध्यम बना कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे। इन सारी बातों का अर्थ है, इस अतिमहत्वपूर्ण विषय को सम्बोधित करने के लिए फिर से वार्तालाप की मेज़ पर वापस लौटना। आम सहमति हासिल कर पाना सरल नहीं है। यदि हम इस में सफल हो गए, तो इसका अर्थ होगा कि यह एक समझौता है जिसमें सारी जनसंख्या की राय को शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त हम इस विषय के लिए भी प्रार्थना और प्रयास करने में जुटे रहें कि एक अन्य सशस्त्र समूह, द एज़ेरसिटो डे लिपेरासियोन नासियोनल (नेशनल लिबरेशन आर्मी) के साथ भी शान्ति वार्ता आरम्भ की जा सके।

हम कोलम्बिया में शान्ति स्थापना के अपने कार्य में, उद्धार के लिए अपने कार्य में दृढ़ बने रहेंगे, और मरकुस 4:26–29 की प्रतिज्ञा पर भरोसा कायम रखें कि बीज बढ़ेगा और हम परमेश्वर के राज्य की कटनी काटेंगे।

– पाब्लो स्टकी, लैटिन अमरीका – अनडियन रिजन रिज़नल रिप्रेजेंन्टेटिव्ह, मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस

भोगौलिक प्रस्तुतिकरण: लैटिन अमरीका और करेबियन